सामाजिक विज्ञान

(नागरिक शास्त्र)

अध्याय-5: जन – संघर्ष और आंदोलन

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

नेपाल की कहानी

- नेपाल में 1990 के दशक में लोकतंत्र स्थापित हुआ।
- नेपाल के राजा औपचारिक रूप से नेपाल के प्रधान बने रहें परंतु वास्तविक सत्ता जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में आ गई शाही खानदान की रहस्यमयी मृत्यु के बाद राजा बने ज्ञानेंद्र इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थे।
- फरवरी 2005 में उन्होंने जनता द्वारा चुनी सरकार को अपदस्थ कर दिया।

नेपाल में लोकतंत्र के लिए संघर्ष

- 2006 में जो आंदोलन उठ खड़ा हुआ उसका उद्देश्य शासन की बागडोर राजा के हाथ से लेकर जनता को दुबारा सौंपना था।
- संसद के सात बड़े दलों ने मिलकर ' सेवन पार्टी अलांयस ' का निर्माण किया।
- नेपाल की राजधानी काठमांडू में चार दिन के बंद का ऐलान किया।
- जल्द ही इसमें माओवादी भी इस दल में शामिल हो गए और इस प्रतिरोध ने अनिश्चितका लीन बंद का रूप ले लिया।
- लोग कर्फ्यू तोड़कर सड़को पर आ गए। सेना जनता के दबाव के आगे झुक गई।
- राजा माँगों को मानने के लिए बाध्य हो गए।
- गिरिजा प्रसाद कोईराला को अंतिरम सरकार का प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।
- संसद फिर बहाल हुई और इसने अपनी बैठकों में कई कानून पास किए। जिसके तहत राजा से अधिकांश शक्तियाँ वापस ले ली गई।
- नयीं संविधान सभा के तौर – तरीकों पर एस . पी . ए और माओवादियों के मध्य सहमति बनी।
- इस संघर्ष को नेपाल का लोकतंत्र के लिए दूसरा संघर्ष कहा गया है।

नेपाल के जन – संघर्ष का उद्देश्य :-

- नेपाल का आंदोलन लोकतंत्र की स्थापना के लिए था।
- नेपाल में चले आंदोलन ने यह तय किया कि देश की राजनीति की नींव क्या होगी।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

नेपाल में लोकतंत्र का आंदोलन

• नेपाल में लोकतंत्र 1990 में कायम हुआ।

• राजा वीरेन्द्र , जिन्होंने सवैंधानिक राजशाही को स्वीकार किया है , उनकी 2001 में शाही परिवार के एक रहस्यम कत्लेआम में हत्या हो गयी।

• नेपाल के नए राजा , ज्ञानेंद्र लोकतांत्रिक शासन को स्वीकार करने के लिए तैयार नही थे।

• फरवरी 2005 में राजा गजेंद्र ने तत्कालीन प्रधानमंत्री को बर्खास्त करके जनता द्वारा निर्वाचित सरकार को भंग कर दिया

• 2006 की अप्रैल में जो आंदोलन उठ खड़ा हुआ उसका लक्ष्य शासन की बागडोर राजा के हाथ से लेकर दोबारा जनता के हाथों में सौंपना था।

• संसद की सभी बड़ी राजनीतिक पार्टियों ने एक ‘ सेवेन पार्टी अलायंस’ (सप्तदलीय गठबंधन – एस. पी.ए.) बनाया और नेपाल की राजधानी काठमांडू में चार दिन के बंद का आह्वान किया।

• इस प्रतिरोध में जल्दी ही अनियतकालीन ‘बंद’ का रूप ले लिया और इसमें माओवादी बागी तथा अन्य संगठन भी साथ हो लिए।

• उन्होंने संसद बहल करने , सर्वदलीय सरकार बनाने तथा एक नयी संविधान सभा की मांग की।

• 24 अप्रैल 2006 में अल्टीमेट अंतिम दिन, राजा ने तीन मांगों को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया।

• एस.पी.ए. ने गिरीजा प्रसाद कोईराला को अंतिम सरकार का प्रधानमंत्री चुना।

• माओवादियों और एस.पी.ए. के बीच नए संविधान बनाने की सहमति हुई।

• 2008 में राजतंत्र को खत्म किया और नेपाल संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया

• 2015 में यहाँ एक नये संविधान को अपनाया गया

बोलिविया का जल युद्ध

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- बोलिविया लातिनी अमरीका का एक गरीब देश है।
- विश्व बैंक ने यहाँ की सरकार पर नगरपालिका द्वारा की जा रही जलापूर्ति से अपना नियंत्रण छोड़ने के लिए दबाव डाला।
- सरकार ने कोचबंबा शहर में जलापूर्ति का अधिकार एक बहुराष्ट्रीय कंपनी को बेच दिए।
- इस कंपनी ने आनन – फानन में पानी की कीमत में चार गुना इजाफा कर दिया।
- अनेक लोगों का पानी का मासिक बिल 1000 रुपये तक जा पहुँचा जबकि बोलिविया में लोगों की औसत आमदनी 5000 रुपये महीना है।
- सन् 2000 की जनवरी में श्रमिकों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं तथा सामुदायिक नेताओं के बीच एक गठबंधन ने आकार ग्रहण किया और इस गठबंधन ने शहर में चार दिनों की कामयाब आम हड़ताल की।
- लगातार हड़तालों का दौर चलता रहा जिसको सरकार ने बर्बरतापूर्वक दबाया।
- जनता की ताकत के आगे बहुराष्ट्रीय कंपनी के अधिकारियों को शहर छोड़कर जाना पड़ा। सरकार को आंदोलनकारियों की सारी माँगें माननी पड़ी।
- जलापूर्ति दोबारा नगरपालिका को सौंपकर पुरानी दरें को बहाल कर दिया गया।

लामबंदी और संगठन

नेपाल के संघर्ष में योगदान :-

• एस. पी.ए या सप्तदलीय गठबंधन जिसमें कुछ बड़ी पार्टियां शामिल थी जिनके संसद में सदस्य थे।

• संघर्ष में नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) भी शामिल हुई, जो संसदीय लोकतंत्र में विश्वास नही करती थी।

• राजनीतिक दलों के अलावा, सभी प्रमुख श्रमिक संघ और उनके परिसंघों ने आंदोलन में भाग लिया।

• स्वदेशी लोगों , शिक्षकों , वकीलों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के समूह ने भी आंदोलन में समर्थन दिया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

बोलिविया के संघर्ष में योगदान :-

• बोलिविया में जल का निजीकरण के विरोध में (FEDECOR) नामक संगठन ने नेतृत्व किया।

• इस संगठन में इंजीनियर और पर्यावरणवादी समेत स्थानीय कामकाजी लोग शामिल थे।

• इस संगठन को सिंचाई पर निर्भर किसानों के एक संघ कारखाना-मजदूरों के संगठन के परिसंघ कोचबंबा विश्वविद्यालय के छात्रों तथा शहर में बढ़ती बेघर-बार बच्चों की आबादी का समर्थन मिला।

• इस आंदोलन को ' सोशलिस्ट पार्टी ' ने भी समर्थन दिया।

• सन 2006 में बोलिविया में सोशलिस्ट पार्टी को सत्ता हासिल हुई।

बोलिवया के जन – संघर्ष का उद्देश्य

- बोलिवया के जन संघर्ष में एक निर्वाचित और लोकतांत्रिक सरकार को जनता की मांग मानने के लिए बाध्य किया।
- बोलिविया का जन – संघर्ष सरकार की एक विशेष नीति के खिलाफ था।

नेपाल और बोलिविया के जनसंघर्षों में समानताएँ और असमानताएँ

समानताएँ :-

- ये दोनों लोकतांत्रिक आंदोलन थे।
- ये दोनों संघर्ष में सफल रहे।
- ये दोनों पूरे विश्व के लोकतंत्रवादियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।
- ये दोनों राजनीतिक संघर्ष के उदाहरण हैं।

असमानताएँ :-

- नेपाल में संघर्ष देश की राजनीति के आधार पर संबंधित था।
- बोलिविया का संघर्ष किसी विशेष नीति से संबंधित था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

लोकतंत्र और जन – संघर्ष

- लोकतंत्र का जनसंघर्ष के जरिए विकास होता है :- यह भी संभव है कि कुछ महत्वपूर्ण फैसले आम सहमति से हो जाएँ और ऐसे फैसलों के पीछे किसी तरह का संघर्ष न हो। फिर भी, इसे अपवाद कहा जाएगा लोकतंत्र की निर्णायक घड़ी अमूमन वही होती है जब सत्ताधारियों और सत्ता में हिस्सेदारी चाहने वालों के बीच संघर्ष होता है।
- लोकतांत्रिक संघर्ष का समाधान जनता की व्यापक लामबंदी के जरिए होता है :- संभव है कभी – कभी इस संघर्ष का समाधान मौजूदा संस्थाओं मसलन संसद अथवा न्यायपालिका के जरिए हो जाए। लेकिन, जब विवाद ज्यादा गहन होता है तो ये संस्थाएँ स्वयं उस विवाद का हिस्सा बन जाती है। ऐसे में समाधान इन संस्थाओं के जरिए नहीं बल्कि उनके बाहर यानी जनता के माध्यम से होता है।
- ऐसे संघर्ष और लामबंदियों का आधार राजनीतिक संगठन होते है :- यह बात सच है कि ऐसी ऐतिहासिक घटनाओं में स्वतः स्फूर्त होने का भाव कहीं न कहीं जरूर मौजूद होता है लेकिन जनता की स्वतः स्फूर्त होने का भाव कहीं न कहीं जरूर मौजूद होता है लेकिन जनता की स्वतः स्फूर्त सार्वजनिक भागीदारी संगठित राजनीति के जरिए कारगर हो पाती है।
- एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी संघर्ष के पीछे बहुत से संगठन होते है :- ये संगठन दो तरह से अपनी भूमिका निभाने है। राजनीतिक दलों का निर्माण एवं दबाव समूह।

लामबंदी और संगठन

- **दबाव समूह :-** लोगों का ऐसा समूह जो सरकार की नीतियों को प्रभावित करके उद्देश्यों की प्रभावित करते है। जैसेः अखिल भारतीय किसान संघ, अखिल भारतीय व्यापार मण्डल, आदि।
- **फेडकोर :-** बोलिबिया के जल युद्ध का नेतृत्व करने वाला संगठन इंजीनियर और पर्यावरणवादी समेत स्थानीय कामाकजी लोग शामिल थे। इस संगठन को किसानों के संघ, कारखाना मजदूरों के संगठन के परिसंघ विश्वविद्यालय के छात्र तथा शहर में बढ़ती बेघर – बार बच्चों की आबादी का समर्थन था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

राजनीतिक दल और दबाव समूह में अंतर

राजनीतिक दल	दबाव समूह
ये सरकार में प्रत्यक्ष भागीदार होते है ।	ये सरकार में प्रत्यक्ष भागरीदर नहीं होते है ।
ये पूरी तरह संगठित होते है ।	इनका संगठन ढीला – ढाला होता है ।
इनका विस्तार क्षेत्र राष्ट्रीय स्तर पर होता है ।	इनका प्रभाव सीमित होता है ।
इनका लक्ष्य लंम्बी अवधी वाला होता है ।	इनका लक्ष्य छोटी अवधी वाला होता है ।

दबाव समूह की कार्यप्रणाली :-

- दबाव – समूह और आंदोलन अपने लक्ष्य तथा गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन और सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए सूचना अभियान चलाना, बैठक आदि आयोजित करना आदि।
- ऐसी युक्तियों का सहारा लेते है जिससे सरकार का ध्यान उनकी तरफ जाएँ। उदाहरण के लिए हड़ताल, चक्का जाम, भारत बंद, जूलूस आदि निकालना।
- सरकार को सलाह देने वाली समितियों और आधिकारिक निकायों की बैठकों में शिरकत करते है।
- कुछ मामलों में राजनीतिक दलों की एक शाखा के रूप में कार्य करते है।
- कभी कभी आंदोलन राजनीतिक दल का रूप भी ले लेते है।
- अधिकांशतया दबाव – समूह और आंदोलनों का राजनीतिक दलों से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता।

दबाव समूह और आंदोलन

- दबाव समूह का निर्माण तब होता है जब समान पेशे, रुचि, महात्वाकांछा या मतों वाले लोग किसी समान लक्ष्य की प्राप्ति के लिये एक मंच पर आते हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- **जन आंदोलन के कुछ उदाहरण हैं :-** नर्मदा बचाओ आंदोलन, सूचना के अधिकार के लिये आंदोलन, शराबबंदी के लिये आंदोलन, नारी आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन।

वर्ग विशेष के हित समूह और जन सामान्य के हित समूह

वर्ग विशेष के हित समूह :-

- जो दबाव समूह किसी खास वर्ग या समूह के हितों के लिये काम करते हैं उन्हें वर्ग विशेष के समूह कहते हैं।
- **उदाहरण :-** ट्रेड यूनियन, बिजनेस एसोसियेशन, प्रोफेशनल (वकील, डॉक्टर, शिक्षक, आदि) के एसोसियेशन।
- ऐसे समूह किसी खास वर्ग की बात करते हैं :- **जैसे** मजदूर, शिक्षक, कर्मचारी, व्यवसायी, उद्योगपति, किसी धर्म के अनुयायी, आदि।
- ऐसे समूहों का मुख्य उद्देश्य होता है अपने सदस्यों के हितों को बढ़ावा देना और उनके हितों की रक्षा करना।

जन सामान्य के हित समूह :-

- जो दबाव समूह सर्व सामान्य जन के हितों की रक्षा करते हैं उन्हें जन सामान्य के हित समूह कहते हैं।
- ऐसे दबाव समूह का उद्देश्य होता है पूरे समाज के हितों की रक्षा करना।
- **उदाहरण :-** ट्रेड यूनियन, स्टूडेंट यूनियन, एक्स आर्मीमेन एसोसियेशन, आदि।

दबाव/आंदोलन समूहों और राजनीतिक दलों के बीच संबंध

- दबाव समूह और आंदोलन राजनैतिक पार्टियों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। किसी भी ज्वलंत मुद्दे पर उनका एक खास राजनैतिक मत और सिद्धांत होता है। हो सकता है कि कोई दबाव समूह किसी राजनैतिक पार्टी से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भी जुड़ा हुआ हो।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- भारत के अधिकांश ट्रेड यूनियन और स्टूडेंट यूनियन किसी न किसी मुख्य पार्टी से सीधे तौर पर जुड़े होते हैं। इस तरह के समूहों के कार्यकर्ता सामान्यतया किसी पार्टी के कार्यकर्ता या नेता भी होते हैं।
- कई बार किसी जन आंदोलन से राजनैतिक पार्टी का भी जन्म होता है। इसके कई उदाहरण हैं ; जैसे असम गण परिषद, डीएमके, एआईडीएमके, आम आदमी पार्टी, आदि।
- असम गण परिषद का जन्म असम में बाहरी लोगों के खिलाफ चलने वाले छात्र आंदोलन के कारण 1980 के दशक में हुआ था।
- डीएमके और एआईडीएमके का जन्म तामिलनाडु में 1930 और 1940 के दशक में चलने वाले समाज सुधार आंदोलन के कारण हुआ था।
- आम आदमी पार्टी का जन्म सूचना के अधिकार और लोकपाल की मांग के आंदोलन के कारण हुआ था।
- अधिकांश मामलों में दबाव समूह और किसी राजनैतिक पार्टी के बीच का रिश्ता उतना प्रत्यक्ष नहीं होता है। अक्सर यह देखा जाता है कि दोनों एक दूसरे के विरोध में ही खड़े होते हैं। राजनैतिक पार्टियाँ भी दबाव समूहों द्वारा उठाये जाने वाले अधिकांश मुद्दों को आगे बढ़ाने का काम करती हैं। कई बड़े राजनेता किसी दबाव समूह से ही निकलकर आये हैं।

राजनीतिक दलों और दबाव समूहों के बीच अन्तर

• दबाव समूह सीधे सत्ता का आनंद नहीं लेते हैं , जबकि राजनीतिक दल ऐसा करते हैं।

• दबाव समूह आमतौर पर समाज के किसी विशेष खंड या दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं ; दूसरी ओर , राजनीतिक दल बड़े सामाजिक विभाजन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• दबाव समूह चुनाव नहीं लड़ते हैं , जबकि राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं और सरकार चलाते हैं ।

• एक समय पर , एक व्यक्ति केवल एक राजनीतिक दल का सदस्य हो सकता है लेकिन कई दबाव समूहों का सदस्य हो सकता है।

• दबाव समूहों के उदाहरण वकील एसोसिएशन , ट्रेड शिक्षक एसोसिएशन , ट्रेड यूनियन आदि।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

SHIVOM CLASSES 8696608541

• राजनीतिक दलों में भाजपा , कांग्रेस , आदि |

दबाव समूह आंदोलन

- दबाव समूह वे संगठन हैं जो सरकारी नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।
- ये संगठन तब बनते हैं जब एक सामान्य उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सामान्य व्यवसाय , रुचि आकांक्षाओं या विचारों वाले लोग एक साथ आते हैं।
- एक हित समूह की तरह , एक आंदोलन भी चुनावी प्रतिस्पर्धा में सीधे भाग लेने के बजाय राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास करता है।
- उदाहरण हैं नर्मदा बचाओ आंदोलन , सूचना का अधिकार आंदोलन , शराब विरोधी आंदोलन , महिलाओं का आंदोलन , पर्यावरण आंदोलन।
- हित समूहों के विपरीत , आंदोलनों में एक ढीला संगठनहै।
- उनका निर्णय लेना अधिक अनौपचारिक और लचीला है ।
- वे सहज सामूहिक भागीदारी पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं ।

वर्ग विशेष के हित समूह

• वे समाज के किसी विशेष वर्ग या समूह के हितों को बढ़ावा देना चाहते हैं जैसे कि श्रमिक , कर्मचारी , व्यवसायी , उद्योगपति आदि।

• उदाहरण के तौर पर ट्रेड यूनियन , व्यापारिक संघ हैं।

• उनकी मुख्य चिंता उनके सदस्यों की बेहतरी और भलाई है , न कि सामान्य रूप से समाज की भलाई ।

जन सामान्य के हित समूह

• इन्हें लोक कल्याणकारी समूह भी कहा जाता है क्योंकि ये किसी ख़ास हित के बजाय सामूहिक हित को बढ़ावा देते हैं।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• इनका लक्ष्य अपने सदस्यों की नहीं बल्कि किन्हीं और की मदद करना होता है।

• मिसाल के लिए हम बँधुआ मजदूरी के खिलाफ़ लड़ने वाले समूहों का नाम ले सकते हैं।ऐसे समूह अपनी भलाई के लिए नहीं बल्कि बँधुआ मजदूरी के बोझ तले पिस रहे लोगों के लिए लड़ते हैं।

आंदोलन समूह

• आंदोलन समूह दो प्रकार के होते हैं : उद्देश्य आधारित आंदोलन और सामान्य आंदोलन जारी करना।

• अधिकांश आंदोलन इस प्रकार के होते हैं जो एक सीमित समय सीमा के भीतर एक ही उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते हैं।

• उदाहरण : लोकतंत्र के निलंबन के लिए राजा के आदेशों को पलटने के विशिष्ट उद्देश्य के साथ लोकतंत्र के लिए नेपाली आंदोलन की शुरुआत हुई।

दबाव-समूह और आंदोलन राजनीति पर कैसे असर डालते हैं:-

• दबाव समूह और आंदोलन अपने लक्ष्य तथा गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन और सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते हैं।

• ऐसे समय में अक्सर हड़ताल अथवा सरकारी कामकाज में बाधा पहुंचाने जैसे उपायों का सहारा लेते हैं।

• अधिकतर आंदोलनकारी समूह अक्सर युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं कि सरकार उनकी मांगों की तरफ ध्यान देने के लिए बाध्य हो।

• दबाव समूह और आंदोलन दलीय राजनीति में सीधे भाग नहीं लेते लेकिन वह राजनीतिक दलों का अचार डालना चाहते हैं।

• कुछ मामलों में दबाव समूह राजनीतिक दलों द्वारा बनाए गए होते हैं अथवा उनका नेटवर्क राजनीतिक दल के नेता करते हैं

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

• 'असम आंदोलन ' द्वारा असम गण परिषद।

दबाव समूह और आंदोलन के सकारात्मक प्रभाव :-

• सरकारें अक्सर अमीर और शक्तिशाली लोगों के . एक छोटे समूह के अनुचित दबाव में आ सकती हैं । जनहित समूह और आंदोलन इस अनुचित प्रभाव का मुकाबला करने और आम नागरिकों की जरूरतों और चिंताओं की सरकार को याद दिलाने में एक उपयोगी भूमिका निभाते हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 69)

प्रश्न 1 दबाव-समूह और आंदोलन राजनीति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

उत्तर – लोग सरकार से अपनी माँगें मनवाने के लिए कई तरीके अपनाते हैं। लोग इसके लिए संगठन बनाकर अपने हितों को बढ़ावा देने वाले कार्य करते हैं जिसे हित समूह कहते हैं। कभी-कभी लोग बगैर संगठन बनाए अपनी माँगों के लिए एकजुट होने का फैसला करते हैं। ऐसे समूह को आंदोलन कहा जाता है। ये हित समूह या दबाव-समूह और आंदोलन राजनीति पर कई तरह से असर डालते हैं।

- दबाव-समूह और आंदोलन अपने लक्ष्य तथा गतिविधियों के लिए जनता का समर्थन और सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए सूचना अभियान चलाना, बैठक आयोजित करना अथवा अर्जी दायर करने जैसे तरीकों का सहारा लिया जाता है। ऐसे अधिकतर समूह मीडिया को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं ताकि उनके मसलों पर मीडिया ज्यादा ध्यान दे।
- ऐसे समूह अक्सर हड़ताल अथवा सरकारी कामकाज में बाधा पहुँचाने जैसे उपायों का सहारा लेते हैं। दबाव-समूह तथा आंदोलनकारी समूह ऐसी युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं कि सरकार उनकी माँगों की तरफ़ ध्यान देने के लिए बाध्य हो।
- व्यवसाय समूह अक्सर पेशेवर 'लॉबिस्ट' नियुक्त करते हैं अथवा महँगे विज्ञापनों को प्रायोजित करते हैं। दबाव-समूह अथवा आंदोलनकारी समूह के कुछ व्यक्ति सरकार को सलाह देनेवाली समितियों और आधिकारिक निकायों में शिरकत कर सकते हैं।

प्रश्न 2 दबाव-समूहों और राजनीतिक दलों के आपसी संबंधों का स्वरूप कैसा होता है, वर्णन करें?

उत्तर – राजनीतिक दलों और दबाव-समूहों के बीच आपसी संबंध विभिन्न रूप ले सकते हैं।

- राजनेताओं और राजनीतिक दलों द्वारा अक्सर दबाव समूह बनाए जाते हैं और उसका नेतृत्व भी किया जाता है। भारत के ज्यादातर मजदूर संगठन और छात्र संघ किसी ना किसी रूप में प्रमुख राजनीतिक दल से जुड़े हुए हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

- कभी-कभी आंदोलन राजनीतिक दल का स्वरुप ले लेती है। DMK और AIADMK पार्टियों का गठन भी इसी तरह किया गया था।
- कई बार दबाव या आंदोलन समूहों द्वारा उठाए गए मुद्दों को राजनीतिक दलों द्वारा उठाया जाता है जिससे दलों की नीतियों में बदलाव होता है।

प्रश्न 3 दबाव-समूहों कि गतिविधियाँ लोकतांत्रिक सरकार के कामकाज में कैसे उपयोगी होती हैं?

उत्तर – दबाव-समूहों की गतिविधियों से लोकतंत्र की जड़े मजबूत करने में मदद मिलती है। ऐसे समूह शक्तिशाली बिजनेस लॉबी के खिलाफ आम जनता की आवाज बुलंद करने में मदद करते हैं। कई बार दबाव समूहों का क्रियाकलाप विध्वंसकारी लगता है लेकिन इन क्रियाकलापों से शक्तिशाली शासक वर्ग और व्यवसायी वर्ग तथा शक्तिहीन आम नागरिक के बीच संतुलन बनाने में मदद मिलती है।

प्रश्न 4 दबाव-समूह क्या हैं? कुछ उदाहरण बताइए।

उत्तर – दबाव समूह वह संगठित तथा असंगठित समूह होते हैं जो सरकार की नीतियों को प्रभावित करते हैं तथा अपने हितों को बढ़ावा देते हैं। उनकी कुछ उद्देश्य होते हैं तथा वे सरकार पर दबाव डालकर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयास करते हैं। साधारणतया इन समूहों के सदस्य वे लोग होते हैं जिनके कुछ सामान्य हित होते हैं। ये प्रत्यक्ष रुप से कभी भी चुनाव नहीं लड़ते बल्कि ये अपने प्रभाव से सत्ता को नियंत्रण में रखते हैं। ये सीधे रूप से राजनीतिक सत्ता पर नियंत्रण नहीं रखते हैं।

उदाहरण के लिए:

- **किसान संघ:** अखिल भारतीय किसान यूनियन।
- **छात्र संगठन:** अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्।
- **व्यापारी संघ:** अखिल भारतीय व्यापार मण्डल।
- **अध्यापक संघ:** अखिल भारतीय अध्यापक परिषद्।

प्रश्न 5 दबाव-समूह और राजनीतिक दल में क्या अंतर है?

उत्तर – दबाव-समूह और राजनीतिक दल में निम्नलिखित अंतर हैं-

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- दबाव-समूह का लक्ष्य सत्ता पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करने अथवा हिस्सेदारी करने का नहीं होता, जबकि राजनीतिक दलों का लक्ष्य सत्ता पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करके सरकार बनाना या विरोधी दल के रूप में सरकार पर नियंत्रण रखना होता है।
- दबाव-समूह का निर्माण तब होता है जब समान पेशे, हित, आकांक्षा अथवा मत के लोग एक समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एकजुट हों। राजनीतिक दल के निर्माण के लिए केवल समान राजनीतिक विचारधारा के लोगों का एकजुट होना जरूरी है चाहे उनके आर्थिक हित अलग-अलग हों।
- राजनीतिक दलों को चुनाव के समय जनता का सामना करना पड़ता है, जबकि दबाव-समूहों को जनता के समर्थन की आवश्यकता नहीं होती।
- दबाव-समूह दलीय राजनीति में सीधे भाग नहीं लेते लेकिन वे राजनीतिक दलों पर असर डालना चाहते हैं, जबकि राजनीतिक दल सीधे दलीय राजनीति में भाग लेना चाहते हैं।

प्रश्न 6 जो संगठन विशिष्ट सामाजिक वर्ग जैसे मजदूर, कर्मचारी, शिक्षक और वकील आदि के हितों को बढ़ावा देने की गतिविधियाँ चलाते हैं उन्हें ________ कहा जाता है।

उत्तर – जो संगठन विशिष्ट सामाजिक वर्ग जैसे मजदूर, कर्मचारी, शिक्षक और वकील आदि के हितों को बढ़ावा देने की गतिविधियाँ चलाते हैं उन्हें वर्ग विशेष के हित समूह कहा जाता है।

प्रश्न 7 निम्नलिखित में से किस कथन से स्पष्ट होता है कि दबाव-समूह और राजनीतिक दल में अंतर होता है।

a) राजनीतिक दल राजनीतिक पक्ष लेते हैं जबकि दबाव-समूह राजनीतिक मसलों की चिंता नहीं करते।
b) दबाव-समूह कुछ लोगों तक ही सीमित होते हैं जबकि राजनीतिक दल का दायरा ज्यादा लोगों तक फैला होता है।
c) दबाव-समूह सत्ता में नहीं आना चाहते जबकि राजनीतिक दल सत्ता हासिल करना चाहते हैं।
d) दबाव-समूह लोगों की लामबंदी नहीं करते जबकि राजनीतिक दल करते हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – c) दबाव-समूह सत्ता में नहीं आना चाहते जबकि राजनीतिक दल सत्ता हासिल करना चाहते हैं।

प्रश्न 8 सूची-I का मिलान सूची-II के साथ करें और नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:-

	सूची-I		सूची-II
1.	किसी विशेष तबके या समूह के हितों को बढ़ावा देना वाले संगठन	a	आंदोलन
2.	जन-सामान्य के हितों को बढ़ाने वाले संगठन	b	राजनीतिक दल
3.	किसी सामाजिक समस्या के समाधान के लिए चलाया गया एक ऐसा संघर्ष जिसमें संगठनिक संरचना हो भी सकता है और नहीं भी	c	वर्ग विशेष हित –समूह
4.	ऐसा संगठन जो राजनीतिक सत्ता पाने के लिए लोगों को एक जुट करता है	d	लोक कल्याणकारी हित समूह

	1	2	3	4
(क)	ग	घ	ख	क
(ख)	ग	घ	क	ख
(ग)	घ	ग	ख	क
(घ)	ख	ग	घ	क

उत्तर –

	1	2	3	4
(ख)	ग	घ	क	ख

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 70)

प्रश्न 9 सूची I का सूची II से मिलान करें जो सूचियों के नीचे दी गई सारणी में सही उत्तर हो चुनें:

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

	सूची I		सूची II
1	दबाव समूह	a	नर्मदा बचाओ आंदोलन
2	लंबी अवधि का आंदोलन	b	असम गण परिषद
3	एक मुद्दे पर आधारित आंदोलन	c	महिला आंदोलन
4	राजनीतिक दल	d	खाद विक्रेताओं का संघ

	1	2	3	4
(अ)	घ	ग	क	ख
(ब)	ख	क	घ	ग
(स)	ग	घ	ख	क
(द)	ख	घ	ग	क

उत्तर –

	सूची I		सूची II
1	दबाव समूह	d	खाद विक्रेताओं का संघ
2	लंबी अवधि का आंदोलन	c	महिला आंदोलन
3	एक मुद्दे पर आधारित आंदोलन	a	नर्मदा बचाओ आंदोलन

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

4	राजनीतिक दल	b	असम गण परिषद

प्रश्न 10 दबाव-समूहों और पार्टियों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।

(क) दबाव-समूह समाज के किसी खास तबके के हितों की संगठित अभिव्यक्ति होते हैं।

(ख) दबाव-समूह राजनीतिक मुद्दों पर कोई न कोई पक्ष लेते हैं।

(ग) सभी दबाव-समूह राजनीतिक दल होते हैं।

ऊपर दिए गए कौन से कथन सही हैं?

(अ) क, ख़ और ग

(ब) क और ख़

(स) ख़ और ग

(द) क और ग

उत्तर – (ब) क और ख़

प्रश्न 11 मेवात हरियाणा का सबसे पिछड़ा इलाका है। यह गुड़गाँव और फ़रीदाबाद जिले का हिस्सा हुआ करता था। मेवात के लोगों को लगा कि इस इलाके को अगर अलग ज़िला बना दिया जाय तो इस इलाके पर ज्यादा ध्यान जाएगा। लेकिन, राजनीतिक दल इस बात में कोई रुचि नहीं ले रहे थे। सन् 1996 में मेवात एजुकेशन एंड सोशल आर्गनाइजेशन तथा मेवात साक्षरता समिति ने अलग ज़िला बनाने की माँग उठाई। बाद में सन् 2000 में मेवात विकास सभा की स्थापना हुई। इसने एक के बाद एक कई जन-जागरण अभियान चलाए। इससे बाध्य होकर बड़े दलों यानी कांग्रेस और इंडियन नेशनल लोकदल को इस मुद्दे पर अपना समर्थन देना पड़ा। उन्होंने फ़रवरी 2005 में होने वाले विधान सभा के चुनाव से पहले ही कह दिया कि नया जिला बना दिया जाएगा। नया ज़िला सन् 2005 की जुलाई में बना।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

SHIVOM CLASSES 8696608541

इस उदाहरण में आपको आंदोलन, राजनीतिक दल और सरकार के बीच क्या रिश्ता नज़र आता है? क्या आप कोई ऐसा उदाहरण दे सकते हैं जो इससे अलग रिश्ता बताता हो?

उत्तर – इस उदाहरण में देखा गया कि मेवात को अलग जिला बनाने के लिए दबाव-समूह और आंदोलनों ने राजनीतिक दलों व सरकार को प्रभावित किया। जब चुनाव का समय आया तो राजनीतिक दलों को दबाव-समूहों के समर्थन की आवश्यकता हुई। इसलिए इन्होंने दबाव-समूहों की बात मानकर मेवात को अलग जिला बना दिया। इससे पता चलता है कि दबावसमूह राजनीतिक दलों पर अपनी माँगों को मनवाने के लिए दबाव डालते हैं तथा राजनीतिक दल सरकार में आने के लिए दबाव-समूहों का समर्थन चाहते हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)